स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से दिया गया
प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू का भाषण

दिनांक:- 15-8-53

बहिनो और भाइयो, हमवतनों,

आज आजाद हिन्द की छठी सालगिरह है, यानी आपकी, हमारी, हम सभों की, सभों का, जो पुनर्जन्म हुआ था, उसकी छठी सालगांठ है। आपको मुबारिक हो, और मुल्क को मुबारिक हो, और खासकर, आज के दिन हमें याद करना है, पहले उस हस्ती का, जिसकी वजह से भारत आजाद हुआ, जिसने एक मुरझाई हुई कौम में जान डाली, जिसने इस पुराने देश को फिर से एक नया बनाया बहुत दर्जे तक, इसलिए पहला काम आज हमारा होना चाहिए गांधी जी की याद का। और फिर गांधी जी की याद के क्या माने ? एक महापुरूष थे जो आये, चमके इस देश में और दुनियां में और गये लेकिन महापुरूष की याद होती है, कि जो बातें उन्होंने बताई हमें, जो सबक सिखायें जो आदेश दिये औरजैसा जीवन उनका था, क्या सबक हमने सीखे? आज के दिन हमें याद रखना है कि आखिर क्या सिद्धान्त थे, क्या बुनियादी बातें थी, जिस पर चलकर यह देश मजबूत हुआ और जिस पर चलकरहम आजाद हुये, क्योंकि अगर हम इन बुनियादी बातों को याद नहीं रखते हों फिर हम दुर्बल हो जाये, कमजोर हो जाये और जो बातें हम करना चाहते हैं, वह नहीं कर सकते। हमारे देश का इतिहास हजारों बरस का है, इन हजारों बरस में बड़ी ऊंची जगह हमारे देश में पाई, और बार बार ठोकर खाकर गिरा भी,

किस बात ने हमारे देशको मजबूत किया, किसने कमजोर किया हमें याद रखना है 2 तो फिर वह क्या बातें हैं, बुनियादी बातें क्या हमारी इस वक्त भी मंजिल है, किधर हम जाते हैं और कौन सा रास्ता है, जिसको हमें पकड़ना है । सोचना है हमें, क्योंकि एक सिद्धांत को हमें और आपको हमेशा याद रखना है कि गलत रास्ते पर चल कर कोई मंजिल पे नहीं पहुंचता । गलत बात को कर के, कोई अच्छा फल हासिलनहीं करता यह एक बुनियादी बात है जिसको अगर हम भूलें तो सारा हमारा काम बिगड़ जाये । हमने देखा । अच्छे कामों का फल आपने देखा आजादी आई और उसी आजादी आने के समय जब हम खुशियां मना रहे थे और जब छः बरस हुये इसी जगह पर खड़े होके मैंने इस झंडे को फहराया था उसी के फौरन बाद एक मुसीबत आई थी, पाकिस्तान में हिन्दुस्तान के ताज प्रान्तों में उत्तर के, एक मुसीबत आई, और कितने लाखों मुसीबत जदाआसानी उससे भाग के इधर से उधर और उधर से इधर आये और उन बुरे बातों का, बुरे कामों का नतीजा हम आज तक भुगत रहे हैं । कोई बुरी बात नहीं होगी जो बात नतीजा न पैदा करें, जैसे कोई अच्छीबात नही है जो अच्छा नतीजा नहीं पैदा करती । इसलिए हमें सोचना है ठंडे दिल से, हमारे सामने बड़े काम हैं, जबर्दस्त काम हैं, इस मुल्क को, 36 करोड़ के मुल्क को उठाना, 36 करोड़ आदमियों के जीवन को अच्छा बनाना , उनकी तकलीफों को दूर करना, बड़े काम हैं एक पुराने हजारों बरस के बरस के मुल्क को नया करना । फिर, किधर हम जातें हैं क्या हमारा इस वक्त

कर्त्तव्य है । पहली बात, जाहिर है, कि हम अपनी आजादी की रक्षा करें, हिफाजत करें, अव्वल बात है । दूसरी बात कि हम और जो दुनियां के देश हैं, सब देश उनसे मित्रता करें, दोस्ती करें, और उनसे मिल के, सहयोग कर के चलें । हम किसी और देश के काम में दखल न दें । और हम अपने देश में किसी और का तेजा दखल मंजूर नहीं करें । इस तरह से हमें अपने देश में किसी और का तेजादखल मंजूर नहीं करें, इस तरह से हमें अपने रास्ते पे चलना है । तीसरी बात और बड़ी जबर्दस्त बात वह यह, कि हम अपने मुल्क के, देश के अन्दर क्या करें ? किस तरह से हम बनायें इस बड़े भारी परिवार को , 36 करोड़ आदमियों के खानदान को ? किस तरह से उसको चलाये ? कैसे परिवार चलते हैं, क्या आपस में लड़कर, झगड़ कर, आपस में दीवार खड़ी कर के ? तो हमें इस देश में जो चीज हमें अलग करती है, जो एक दीवार है, एक को दूसरे से करें, उसको हटाना है, हमें जो यहां साम्प्रदायिकता फिरकापरस्ती है उसको हटाना है, क्योंकि देश को वह दुर्बल करती है, देश के महान परिवार को तोड़ती है, एक दूसरे को दुश्मन बनाती है और हमें नीचा करती है । हमें प्रान्तीयता को भूलना है अगर हम प्रान्त को आगे बढ़ायेंगे , सूबे को आगे बढ़ाये, तो देश को हम नीचे हमें
करते हैं पीछे करते हैं, और/देश को आगे रखना है, इस बात को याद रखें के की अगर हिन्दुस्तान बढ़ता है तो हम सब बढ़ते हैं और अगर हिन्दुस्तान नहीं बढ़ता, तो कोई नहीं बढ़ता, चाहे हमारा प्रान्त या जिला आगे हो या पीछे हो । तीसरी बात जो एक दीवार है पुरानी चीज है, पुराना ऐब है, वह जातीयता है, हममें, जो अलग अलग खानों में हमें रखें, कमजोर

करे, दुर्बल करे, और वह बड़े देश का विचार कम करें, और अपने जाति का अधिक करे । इसको भी हमें हटाना है इस देश से तब हम मजबूती से आगे बढ़ें । फिर बड़े काम हमारे सामने, इस तरह से मजबूत हमने किया । बड़े काम हमारे आर्थिक हैं, देश के करोड़ो आदमियों को उठाना गरीबी से, बेरोजगारी को खत्म करना, सब में बड़े काम यह हैं क्योंकि आखिर में एक देश की ताकत जैसे किसी व्यक्ति की ताकत खाली लम्बी चौड़ी बातें करने से तो नहीं होती, उसकी आर्थिक शक्ति से होती है, उसके चरित्र से होती है उसमें आपस में एकता कितनी है । तो हमने सियासी आजादी हासिल की, लेकिन वह अधूरा स्वराज्य है, स्वराज्य जब पूरा हो, जब उसकी पहुंच एक एक के पास जाये और एक एक की आर्थिक समस्या अच्छी हो । तो यह सब में बड़ा काम जिसमें हम लगे हैं कि इस हिन्दुस्तान की गरीबी को दूर करना, और बेरोजगारी को खत्म कर के हरेक के पास काम हो, हरेक पुरूष और स्त्री, अपने काम से, देश के लिए और अपने लिए धन पैदा करें, और इससे हमारी शक्ति बढ़े यह बड़े काम है । और दुनियां में हमारा काम है कि जहां तक बन पड़े हम अपनी कोशिश अमन के लिए करे, शान्ति हो, अमन हो, और लड़ाईयां न हों । यही हमने इतने दिन से कोशिश की और हमारा देश कोई दुनियां में कोई बहुत जबर्दस्त हिस्सा तो लेता नहीं, न हमारे लेने की इच्छा है हम अपने घर को सम्भालना चाहते हैं, लेकिन फिर भी जो कुछ थोड़ा बहुत हम कर सकते थे, हमने किया, और उसकी कदर हुई, और कदर होने पर उसकी जिम्मेदारियां हमारे ऊपर आई हैं, और आप जानते हैं कि इस समय हमारे कुछ साथी, हमारी कुछ फौजें हिन्दुस्तान

के बाहर जा रही है, हजारों मील कोरिया के तरफ। कहाँ फौजें आ रही हैं ? फौजें एक देश को छोड़ के जाती हैं, जाया करती हैं, लड़ाई लड़ने और मुल्कों में, लेकिन हमारी फौज आ रही है लड़ाई के लिए नहीं, लेकिन एक अमन के लिए। हमारी फौज आ रही है दावत पर औरों की, और मुल्कों की, जो और मुल्क आपस में लड़ते थे लेकिन एक बात में वह सहमत हुये कि हिन्दुस्तान की दावत करें---हमारी फौजों को बुलायेंकी वहां कुछ वह अपना कर्त्तव्य करें। हमारी इच्छा नहीं है कि हम जिम्मेदारियां और जगह दुनियां में लें, लेकिन जब ऐसा कोई फर्ज होता है, कर्त्तव्य, तो हमें उनको पूरा करना होता है और इस समय वहां जा रही है और दुनियां में फिर से कुछ चर्चा हैयह जो लड़ाई की फिजा चारों तरफ थी, वह अब कुछ बदली जायेगी कि वैसे ही रहेगी। कोशिश है बदलने की मुझे अफसोस है कि अब तक बाज लोग धमकी की आवाज से बोलते हैं, डर की आवाज से बोलते हैं अगर हमें सुलह चाहिए दुनियां में, अगर हमें मेल चाहिए तो एक दूसरे को धमकी दे कर, एक दूसरे को डरा कर नहीं, लेकिन जरा दिल मजबूत करके, हाथ बढ़ा के दोस्ती होती है, न कि धमकी दे के। तो अब फिरसे सुलह की बातें हो रही है, तो बेहतर हैकिजो मुल्क उसमें शरीक हैं, वह जरा अपने दिमाग कोभी सुलह काकरें, खाली बातों से तो काम नहीं चलता है, यह बाहर के हमारे फरायज हैं, उनको हमें अदा करते हैं। और यह अन्दर के हैं कि हममुल्क की गरीबी और यह आर्थिक हालत को हम अच्छा करें जो सबमें बड़ा काम है बड़े बड़े काम इस 6 बरसमें हिन्दुस्तान में हुये और मैं समझता हूं कि जब बाद में तारीख लिखी जायेगी तो काफी उनका चर्चा होगा कि हम 6 बरसों में क्या क्या हुआ।

क्या क्या नहीं लेकिन उसी के साथ यह भी सही है कि बहुत बातें जो हम करना चाहते थे नहीं हुई हैं । काम बहुत बड़ा है, करने वाले कभी कभी कम से मालूम होते हैं, लेकिन अगर आप सभी करने वालों में हो तब वह काम भी हल्का हो जाये, अगर देश के सब लोग उस बोझे को उठायें देश को तो देश का वो बोझा हल्का है । यह एक बड़ा काम है ।

अभी आज से एक सप्ताह हुआ, एक हफ्ता हुआ, चन्द वाकयात काश्मीर में हुये थे जिन की वजह से, कुछ हमारे पड़ौसी मुल्क पाकिस्तान में काफी परेशानी हुई है । मैं उन वाकयात के निस्बत ज्यादा नहीं कहा चाहता आप आप से, क्योंकि यह मौका नहीं, लेकिन इतना मैं आप से कहा चाहता हूं कि बहुत, क्या, आप जरा आगाह हो जाये, गलत खबरों को न मानें, गलत अफवाहों को न सुनें, कितनी गलत बातें फैलती हैं, और जब मैं पाकिस्तान के अखबारों को पढ़ता हूं, इस पिछले चन्द दिनों के तो मैं हैरान हूं कि कैसी गलतखबरें उसमें छपी हैं, काश्मीर के बारे में, कि हमारी फौजों ने वहां क्याक्या किया, क्या नहीं किया । मैं आप से कहता हूं दावे से कहता हूं, जानकर कहता हूं कि हमारी फौज ने वहां कोई हिस्सा इस वाक्ये में नहीं लिया । इसलिये: फिर, फिर इसके माने क्या कि यह झूठ झूठ इस तरह से फैलाया जाये खाली यहां नहीं, पाकिस्तान में, लेकिन बाद अखबार नवीसों ने और मुल्कों में भी इस बात को कहा । भेजा जाता है इस तरह से खामखां के लिए गलत बातें भेजनी खामखां के लिए लोगों को एक इश्तआल देना, भड़काना, लोगों को, ताकि मुल्कों में रंजिश पैदा हो । काश्मीर का यह अंदरूनी मामला, आज बातें काश्मीर में हुई इस वक्त, मुझे रंज है उसका,

क्योंकि हमेशा रंज होता है जब एक पुराने हम सफर और साथी से कुछ अलेहदगी हो, रंज की बात है, औरमैं आप से कहूंगा ऐसे मौके पर किसी को बुरा भला कहना अच्छा नहीं है, दुरूस्त नहीं है । क्योंकि दूसरे को बुरा कहना, अपने एक पुराने साथी को, वह अपने ऊपर आ जाता है, घूमकर । लेकिन रंज होता है इस बात का, लेकिन कभी कभी कितना ही रंज हो, अपने कर्त्तव्य को, अपने फर्ज को पूरा करना होता है, अदा करना होता है । तो लेकिन अगर उसको करें भी तो वह मान से, सही रास्ते पर चल के सलत बातों से नहीं, और हमेशा उन उसूलों को याद रख के, काश्मीर का मैंने आपसे कहा, अक्सर बातें वहां हुईं, जिनसे तकलीफ हुई । उसके पीछे भी एक कहानी है, और उसके पीछे वह भी वाकयात हैं जिसने किसी कदर काश्मीर के लोगों को भड़काया, वह वाकयात जो कुछ आपके दिल्ली शहर में हुये, वह वाकयात जो कुछ पंजाब में, कुछ और जगह वही साम्प्रदायिकता के, फिरकापरस्ती के, अजीब तमाशा वहां चले, एक बात हासिल करने, और बिलकुल उसका उल्टा असर पैदाकरेगा , तो इससे आप देखेंगे कि गलत रास्ते पर चल के, गलत नतीजा होता है, चाहे आप की नीयत कुछ हो, चाहे आप कहीं जाना चाहे, खैर काश्मीर का मैं आप से कहता था, और मैं फिर से दोहराना चाहता हूं, जो मैंने पहले भी कहा है, और वह यह कि यह आज नहीं, कई बरस हुये, 6 बरस हुये साढ़े पांच बरस हुये, जब हमने था
इकरार किया/कि काश्मीर का भविष्य, काश्मीर का मुस्तकबिल काश्मीर के लोग ही फैसला कर सकते हैं, यह हमने कहा था

और हमने इसको बाद में भी दोहराया है और आज भी यह बिल्कुल हमारे सामने तय शुदा बात है कि जो काश्मीर का फैसला आखिर में होगा वह वहां के लोग ही कर सकते हैं, कोई जबरन, कोई जबर्दस्ती फैसला न वहां, न कहीं और होना चाहिए पहली बात यह । दूसरी बात यह है कि वहां काश्मीर में एक नई गवर्नमेंट पिछलेहफ्ते में कायम हुई, और उस, वह गवर्नमेंट जल्दी हुई, लेकिन जाहिर है वह गवर्नमेंट वहां उसी वक्त तक कायम रह सकती है, जब तक कि वह नुमायंदगी काश्मीर की लोगों की करे, यानी जो इस वक्त वहां एक चुनी हुई विधान सभा है, कान्स्टीट्यूण्ट असेम्बली है अगर वह चुनी हुई सभा, उसको स्वीकार करती है तो ठीक है, नहीं करती, तो कोई दूसरी गवर्नमेंट वहां वह कांस्टीट्यूण्ट असेम्बली बनायेगी । हमारे जो सिद्धांत हिन्दुस्तान के लिए रहे, वह हरेक हिन्दुस्तान के हिस्से के लिए हैं, वह काश्मीर के लिए हैं । तो यह वाक्या हुआ काश्मीर में, जो कुछ हुआ उससे मैं समझ सकता हूं कि आप को या औरों को यकायक कुछ ताज्जुब हो, कुछ आश्चर्य हो, क्योंकि आप को जो इसकी पुरानी कहानी तो बहुत दर्जे मालूम नहीं । लेकिन किस दर्जे बात बढ़ाई गयी और गलत बातें बताई गयी, और मुल्कों में खासकर हमारे पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान में और वहां एक अजीब परेशानी, अजीब एक नाराजगी और एक इजहारे राय हुआ है इन बातों पर, जिससे कोई असलीयत से ताल्लुक नहीं, खैर मैं यहां नुक्ताचीनी करने नहीं खड़ा हुआ, खास किसी की भी, लेकिन अपने रंज का इजहार कि कि इस तरह से जल्दी से, हम अखड़ जायें, घबरा जायें, परेशान हो जायें । इस तरह से तो कोई बड़े

सवाल हल नहीं होते, समझ में नहीं आते और मैं आप को आगाह करना चाहता हूँ, आज नहीं कल, कल नहीं परसों, हजार हमारे सामने बड़े बड़े सवाल आयेंगे, दुनियां के सामने आयेंगें, और उस वक्त आप का और हमारा और हमारे मुल्क का इम्तहान होगा कि हम उसको एक शान्ति से, सुकुन से, इतमीनान से, उनके विचार करते हैं या घबराये हुये, परेशान हुये, डरे हुये इधर उधर भागते हैं। एक कौम के इम्तहान होते हैं, इस तरह से और जितना ज्यादा मुश्किल सवाल है, उतना ही ज्यादा दिमाग ठंडा होना चाहिए, उतना ही ज्यादा हमें शान्ति से, सुकून से, काम करना चाहिए। काश्मीर पे जब हमने यह बुनियादी उसूल मुकर्रर कर दिये कि काश्मीर के लोग तय करेंगे, काश्मीर ---तो उस के बाद फिर बहस किस बात की ? हां बातें हो सकती है, कि किस तरीके से हों, तरीका, रास्ता क्या हो ? एक उसूल की बहस तो नहीं, शुरू से जब से यह काश्मीर का मामला हमारे सामने आया, हमने कहा यही बात कहीं, और दूसरी बात यह कहीं कि काश्मीर की जगह एक खास है। खास, उसकी जगह है हिन्दुस्तान के खानदान में काश्मीर आया, खुशी की बात है, मुबारिक हो, लेकिन वहां यह उसकी जगह खास रखी आम औरों की नहीं, क्योंकि एक ज्योगराफिया ने और वजुहात ने एक जगह उसे दी और इन वाकयात से। तो फिर जो लोग नासमझी में गुलशोर मचायें कि सभों से एक सा होना चाहिए काश्मीर का भी, औरों का साथ यह न वाकयात को समझें और न जो औरहालात हैं और देखा उन्होंने उसका नतीजा उल्टा हुआ पाकिस्तान का मैंने अभी आप से कहा, अभी चन्द रोज हुये

मैं पाकिस्तान गया था, उनकी दावत पर और वहां की हुकूमत ने और वहां की जनता ने, बहुत मोहब्बत से मेरा स्वागत किया। मेरे दिल पर उसका जबर्दस्त असर हुआ, खासकर जनता की मोहब्बत का, करीब वही हाल था, जैसे हिन्दुस्तान के हिस्सों में आप हमारे भाई और बहिन और बच्चे मुझ से प्यार औरमोहब्बत करते हैं वहीं नक्शा मैंने करांची शहर में देखा, और फिर मैंने महसूस किया कि आखिर मैं किस में, कहां गैर मुल्क में आया, आखिर इस में और हमारे मुल्क में कौन बड़ा फर्क है, बहुत सारे चेहरे वही, पुराने चेहरे, बहुत सारे पुराने दोस्त, पुराने साथी, बहुत सारे वहां से भागे हुये लोग जिनको वहां देखा था, तस्वीर वही थी, कुछ जरा फर्क था। गरज कि मैंने महसूस नहीं किया, कि मैं कोई बड़े गैर मुल्क में हूँ। एक वह चीज थी वह तस्वीर थी और किश थोड़े दिन बाद मुमकिन है जोश से गलतफहमीसे लोगों को जोश आये और तस्वीर बदले। तो इससे आप देख सकते हैं कि कैसे लोगों काबरताव मुन्नसिर होता है, इस बात पर, कि उनके साथ कैसा किया जाये और मैं चाहता हूं कि हम औरआप अपने उसूल से, अपने सिद्धांत से नहीं हिलें, कि हम सही रास्ते पे चलेंगें हम दोस्ती करेंगे और मुल्कों से, हम पाकिस्तान से भी दोस्ती के रास्ते पे चलेंगें, चाहे वहां कुछ गलतफहमी हो, जोश भी चढ़े, वह भी ठंडा हो जायेगा, अगर हम सही रास्ते पे चलें, क्योंकि आखिर में यह हमारे मुल्क के लिए या पाकिस्तान के लिए किस के लिए इस तरह जरा भी फायदा हो सकता है, कि हम उसमें एक कशमकश में रहे हर वक्त, और एक दूसरे से नाराजहों, नफरत करें। नफरत का नतीजा अच्छा नहीं है, डर का नतीजा

डर को अपना साथी न बनाइये, गलत साथी है वह । कुछ दिनों में, कुछ दिनों में क्या कल पाकिस्तान के, वजीरे आजम प्रधानमंत्री दिल्ली शहर आ रहे हैं, हमारी दावत पर, जैसे उनकी दावत पर मैं करांची गया था । वह आते हैं, तो मैं चाहता हूं कि दिल्ली के रहने वाले इस पुराने शहर, तारीखी शहर के रहने वाले शान से उनका इस्तेकबाल करें, उनका स्वागत करें, दिखाये कि हमारा दिल बड़ा है और उसमें बहुत बातें हैं और उसमें पाकिस्तान से भी दोस्ती है । मुमकिन है उनके दौरान यहां रहने के, इसी लाल किले में दिल्ली के बाशिन्दगान की तरफ से उनका इस्तेकबाल हो और जगह भी होगा, तो मैं चाहता हूं कि हम औरआप मिल के और सारा मुल्क इस वक्त आज के दिन इन बड़े उसूलों को, सिद्धांत को याद रखें, महात्मा जी की यादकरें, अपनी कामयाबियां जो हुई हैं उनको सोचें, लेकिन खासकर जो हमारी नाकामयाबी हुई है जहां हम फिसले हैं इन पिछले 5-6 बरस में उन्हें याद करें, क्योंकि उनसे हमें सबक सीखना है और फिर से इकरार हम करें इस प्यारे झण्डे के नीचे कि हम हिन्दुस्तान की भारत की खिदमत करेंगे, सेवा करेंगे, सेवा करेंगे उसकी एकता बढ़ा कर, उसमें मेल बढ़ा कर, उस में जो अलग अलग धर्म मजहब हैं, उनमें एकता कर के, मिल कर, क्योंकि सब बराबर के हक दार हैं हिन्दुस्तान में, उसमें यह प्रान्तीयता को निकाल कर, और जो जो दीवारें हैं जातीयता, प्रान्तीयता उनको हटा कर, देश को मजबूत करेंगे, और सारी अपनी ताकत से लगायेंगे, उसको बनाने में, न कि एक दूसरे को बिगाड़ने में, और और दुनियां, हम और दुनियां में अमन करेंगे किसी से हमें लड़ना नहीं है, दोस्ती करेंगे, एक लड़ाई हमें लड़नी है और उसको मिलकर

और दिल लगा के लड़ेंगे और वह लड़ाई है हिन्दुस्तान की गरीबी से, गरीबी को यहाँ से लड़ के उसे निकालना है, लम्बी लड़ाई है काफी मेहनत है काफी उसमें पसीना बहेगा, लेकिन वह एक माकूल चीज है जिससे कि हम हिन्दुस्तान के करोड़ों आदमियों को ऊंचा करें, उनको उठायें, उनकी मुसीबतों को दूर करें, यह बड़ा काम है और वह हमारी मंजिल है अगली, और जब तक हम वहां पहुँचते नहीं, उस वक्त तक हमें बढ़ते जाना है। इन उसूलों को आप याद रखें। और आप और हम और आगे बढ़े, मुल्क के मंजिल एक के बाद दूसरे आते हैं कभी खत्म नहीं होती, क्योंकि एक देश अमर होता है और भारत आगे बढ़ेगा, खाली यह हमारी ख्वाहिश है कि हमारे जमाने में आप के और हमारे, हम भी कुछ उसकी खिदमत करे उसको बढ़ाये और हमारे बच्चे और बच्चों के बच्चे बायें, वह भी इस जमाने को कुछ याद रखें, जब भारत आजाद हुआ बहुत दिनों बाद, और उसने एक बड़े परिश्रम से, बड़े कोशिश सेनये भारत को बनाया, जिसमें वह रहेंगे---जयहिन्द।

मेरे साथ, मेरे साथ, आप भी तीन बार "जयहिन्द "कहें--

सब मिलकर जोर से

॥पं०जी॥जयहिन्द--------॥जनता॥जयहिन्द।

॥पं०जी॥जयहिन्द--------॥जनता॥जयहिन्द।

॥पं०जी॥जयहिन्द--------॥जनता॥जयहिन्द।